लोकनायक स्वामी विवेकानन्द का नारी विषयक दृष्टिकोण

डॉ॰ मिन्तु
असि. प्रो. हिन्दी
कु.मा.रा.म.स्ना. महाविद्यालय, बादलपुर

हमारे देश में नारी पूजनीय है। स्त्री को सम्मान देते हुए महाकवि प्रसाद ने भी कहा है–

नारी तुम केवल श्रद्धा हो।
विश्वास रजत नग पग तल में।
पीयूष स्रोत सी बहा करो,
जीवन के सुन्दर समतल में।''[1]

भारतीय समाज में पुरुष घर के बाहर के कार्यों का प्रबन्धक रहा है और स्त्रियाँ गृह लक्ष्मी के रूप में गृहस्थी की अधिकारिणी रही हैं। स्त्री पुरुष की अर्धांगिनी और सहधर्मिणी मानी जाती है।

''आरम्भ से ही पुरुष ने अपने अधिकारों के चलते स्त्री-पुरुष के सम्बन्धों को लेकर कुछ सामाजिक धारणाएं बनाई। सारे नियम और सिद्धान्त पुरुष ने अपने हक में रख लिए। स्त्री को राज्य और पुरुष की पूँजी समझा गया।''[2] प्राचीन काल में भारत के ऋषि-मुनियों ने नारी शिक्षा के महत्व को भली-भाँति समझा था। वैदिक काल में नारी शिक्षा का सर्वांगीर्ण विकास हुआ। गार्गी और मैत्रेयी जैसी विदुषियों ने इस देश की भूमि को अलंकृत किया तदुपरान्त समय परिवर्तित हुआ। हमारे समाज में अनेक कुप्रथाएं फैलनी शुरू हुई और नारी का महत्व घटना शुरू हुआ। मुस्लिम काल में पर्दा-प्रथा आरम्भ हुई।

नारी की शिक्षा प्राप्त से वंचित कर दिया गया। उसे केवल घूंघट की ओट में घर की चारदीवारी में बंद कर दिया गया। तभी से नारी विवशता की बेड़ियों में जकड़ी स्वाधीनता की बाट जोह रही थी। वही नारी जिसने शिक्षा प्राप्त कर महान विद्वानों से अपने पति की पराजय से